बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना

को

पाठ्यक्रम एवं पाठ्य ग्रंथावली

प्रकाशक

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना

पाठ्यक्रमौपसमिति के सदस्य

1. श्री हरेन्द्र प्र० सिंह,
   सचिव, बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना — संयोजक
2. श्री उमापति चौधरी
   परीक्षा - नियंत्रक — पदेन सदस्य
3. श्री गोपालजी त्रिपाठी, सदस्य बि० सं० शि० बोर्ड, पटना— सदस्य
   प्रधानाध्यापक, रामावतार सं० उ० वि० हराजी, सारण
4. श्री रवीन्द्रनाथ तिवारी (सं०म०वि० संग्रामपुर, पू० चम्पारण
   — सदस्य
5. डॉ० यदुवंश मिश्र (अवकाश प्राप्त शिक्षक) -- सदस्य
   (ग्राम, पोस्ट--गजहरा मधुबनी
6. श्री रामविलास मेहता (प्रधानाध्यापक) -- सदस्य
   (जनता बीथी गंगाई प्रा०स०म०सं०वि० ढेना (सुपौल)
7. श्री राजेन्द्र प्रसाद झा (स०शि०) -- सदस्य
   [श्यामचरण सं० विद्यापीठ, वौसी [बाँका]

प्रस्तोता

डॉ० जय नारायण यादव

अध्यक्ष

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना ।

पत्रांक ३/वा-१३२/९७ शि० ९४१

सेकेन्ड्री, प्राथमिक एवं वयस्क शिक्षा विभाग, बिहार

प्रेषक

कुमार गौरीशंकर सिन्हा,
विशेष निदेशक माध्यमिक शिक्षा

सेवा में,

अध्यक्ष/सचिव,
बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना

पटना, दिनांक १३ जुलाई १९९८

विषयः-बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुमोदन के संबंध में।

महोदय,

निदेशानुसार उपर्युक्त विषयक आपके पत्रांक १३-९-९७ के प्रसंग में कहना है कि बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के नये पाठ्यक्रम का अनुमोदन राज्य सरकार इस शर्त्त पर करने के प्रस्ताव पर सहमत है कि इसके लिए किसी प्रकार का कोई वित्तीय भार वहन नहीं किया जाएगा और न ही किसी विद्यालय में कोई नया पद सृजित किया जाएगा।

विश्वासभाजन,

ह० कुमार गौरीशंकर सिन्हा
विशेष निदेशक माध्यमिक शिक्षा बिहार

विद्यावाचस्पति डॉ० जयनारायण यादव

एम०ए०(हिन्दी), आचार्य त्रय, पीएच०डी० (विद्यावारिधि)
डी० लिट्० (विद्यावाचस्पति) बी०टी०, अ० भा० मैथिली
रजत पदक विजेता (इलाहाबाद)

दूरभाष :
आवास-
कार्यालय-२२८६६९

विभागीय पत्रांक १३/पा०—१३२/९७ शि० ९४१

दि०/१३-७-९८ के क्रम में बिहार सं० शि० बोर्ड पटना द्वारा गठित पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम को बोर्ड द्वारा पारित कर बिहार सरकार को की गई अनुशंसा के तहत स्वीकृति प्रदान कर दी गई है।

ज्ञातव्य हो कि १९७६ के पश्चात १९८१ में बोर्ड गठन के बाद वर्षों से प्रतीक्षा एवं जिज्ञासा के क्रम में प्राचीन, अर्वाचीन बी०टी० बी०सी० एवं सी०बी०एस०सी० के पाठयक्रमों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव को ध्यान में रखकर बिहार के विद्वद अध्यापक वृद एवं छात्र समुदाय की मनोभावना की पूर्ति का इसमें वाञ्छित प्रयास किया गया है।

आशा है कि यह पाठयक्रम प्राचीन, अर्वाचीन एवं सामान्य आधुनिकता का मणिकाञ्चन संयोग अन्य राज्यों के लिए भी सावित होगा।

इसी समन्वयात्मकता को ध्यान में रखकर बिहार सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री जी ने इसकी स्वीकृति प्रदान करदी है।

अत: वर्षों से चातक प्रतीक्षा की पूर्ति हेतु यह पाठयक्रम पत्रं पुष्पं फलंतोयं रूपे १ जनवरी १९९९ से विहार के समस्त प्राथमिक वि० से लेकर माध्यमिक स्तर तक के वि० में शिवा सन्तु पन्था: सदृस लागू किया जा रहा है।

भवदीय

अध्यक्ष

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना

प्रस्तावना

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के

पाठ्यक्रम का वैशिष्ट्य

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड ऐसे पाठ्यक्रम को प्रस्तुत करता है जिसमें प्राच्य शिक्षा पद्धति की मुख्य धारा के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा आधुनिक विषयों के सन्दर्भ में अपनायी गयी वैज्ञानिक पद्धति का विलक्षण सम्मिश्रण हैं। इस एकीकृत प्रणाली का नाम "समेकित शिक्षा प्रणाली" दिया गया है।

"प्राच्य शिक्षा पद्धति" से अभिप्रेत है पूर्व के देशों में उत्पन्न एवं बिकसित शिक्षा पद्धति। पूर्वी देश हमारे भारत के प्रातः स्मरणीय ऋषियों ने सुदूर प्राचीन में समस्त अपरा विद्या (संसारोपयोगी ज्ञान) को वेदों में सूत्रबद्ध किया जहाँ ऐसी शिक्षा पद्धति का उदय हुआ कि सारा विश्व भारत को गुरु के रूप में वरण करने को विवश हो गए। जहाँ अथर्व वेद से आयुर्विद्या निसृत हुई और चरकाचार्य जैसे महान् शोधकर्त्ताओं ने उसे विश्व पटल पर रखा, वहीं महर्षि कणाद जैसे महान् दार्शनिक ने अपने वैशेषिक दर्शन के माध्यम से विश्व को भौतिक विज्ञान का परिचय कराया। रासायनज्ञ नागार्जुन, खगोलविद् वराहमिहीर;

गणितज्ञ आर्यभट्ट प्रभृति महान विद्वानों को इसी प्राच्य शिक्षा पद्धति ने जन्म दिया जिसने समस्त विश्व को ज्ञान से आलोकित किया। समय की क्या विडम्बना हुई कि हमारे ही देश के उक्त महान् सपूतों के द्वारा विकसित विद्या को आज हमारे ही देश के विश्व-विद्यालयों एवं बोर्डों में न पढ़ाकर पाश्चात्य पद्धति एवं पाश्चात्य भाषा में पढ़ाई जा रहा है।

सम्प्रति बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड जैसे कुछ संस्था ही हैं जो प्राच्य शिक्षा पद्धति का दीपक जलाए रखे हैं और वस्तुत: शिक्षा के क्षेत्र में विकसित अत्याधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे की ओर गतिमान है।

इसी विशिष्ट समेकित प्रणाली में निर्मित पाठ्यक्रम को बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

नये पाठ्यक्रम के नीति निदेशक तत्व :

पाठ्यक्रम समिति ने नये पाठक्रम के निर्माण के सन्दर्भ में उनके निर्देशक तत्वों पर विचार किया। इस क्रम में यह निर्णय लिया गया कि प्रथमा से मध्यमा स्तर तक के पाठ्यक्रम के निर्माण में निम्नाँकित उद्द`श्यों की पूर्ति हो सके।

1. वे चरित्रवान एवं समाज तथा देश के सच्चे नागरिक बन सकें।

2. वे संस्कृत भाषा को सम्यक् ढंग से लिख एवं बोल सकें। साथ ही वेद, संस्कृत, साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद, कर्मकाण्ड एवं दर्शन प्रभृति प्राच्य विद्याओं के भविष्य में गंभीर विद्वान् बनने के मार्ग को चुनने योग्य बन सकें।

3. हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि सामान्य विषयों के सन्दर्भ में हमारा पाठ्यक्रम केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रमों से साम्य बनाये रखे ताकि हमारे छात्र स्पर्द्धा परीक्षाओं में कतई पीछे नहीं रहे।

नीति निदेशक तत्व के आलोक में नये पाठ्क्रम का स्वरूप :

1. निर्देशक तत्त्व के प्रथम विन्दु के आलोक में गद्य एवं पद्य की ऐसी पुस्तकों को नये पाठ्यक्रम में लिया गया है जिससे भाषा की जानकारी के साथ-साथ छात्रों को राष्ट्रीयता एवं सच्चरित्रता का अनुकरणीय ज्ञान हो सके।

2. द्वितीय विन्दु को ध्यान में रखते हुए नये पाठ्यक्रम में प्राच्य शिक्षा पद्धति की मूल धारा का अनुशरण किया गया है जो आज की पाश्चात्य वैज्ञानिक पद्धति से भी पूर्णत; साम्य रखती है। प्रथम वर्ग से ही "भाषा" पत्र के अन्तर्गत हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत को भी सम्मिलित कर दिया गया है। इसके अन्तर्गत संस्कृत पद्य पाठ के माध्यम से बच्चों में संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि जगायी गयीहै। साथ ही संस्कृत शब्दों द्वारा निर्दिष्ट चित्रों के माध्यम से वर्णमाला का ज्ञान देने का प्रयास किया गया है ताकि प्रारम्भ से ही बच्चों को संस्कृत शब्दों का ज्ञान हो सके।

बच्चों के बोलचाल के माध्यम से याद करने की प्रवृत्ति का उपयोग करते हुए प्रथम वर्ग से ही बच्चों को हिन्दी की गिनती के साथ-साथ संस्कृत की गिनती भी सिखाने का प्रयास किया गया है।

सुनकर याद करने की प्रवृत्ति का उपयोग द्वितीय एवं तृतीय वर्गों में भी किया गया हैं। यही कारण है कि द्वितीय वर्ग से ही अमरकोष के कुछ श्लोक तथा दो-दो शब्द रूपों एवं धातुरूपों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया हैं।

मध्यमा में पद्य के साथ-साथ गद्य भाग पर भी विशेष ध्यान रखा गया हैं जिसका वर्त्तमान प्रचलित पाठ्यक्रम में अभाव था। भाषा ज्ञान में गद्यात्मक ग्रन्थों के साथ-साथ पत्र लेखन एवं निबन्धादि लेखन का भी अत्यन्त ही महत्वपूर्ण योगदान है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर प्रथमा एवं मध्यमा के पाठ्यक्रम में पत्र लेखन एवं निबन्ध लेखन को भी समाविष्ट किया गया हैं।

3. सामान्य विषयों के सन्दर्भ में यह ध्यान रखा गया है कि हमारे छात्र सी. बी. एस. ई. या अन्य बोर्डों के पाठ्यक्रम में पढ़ने वाले छात्रों से स्पर्द्धा में पीछे न रहे तथा उनपर पुस्तकों का बोझ भी न बढ़े। इसी हेतु से पाठ्यक्रम में सामान्य विषयो के विषय वस्तु वे ही रखे गये हैं, जो सामान्य विद्यालयों के लिए स्वीकृत हैं।

सामान्य विषयों में सी. बी. एस. ई. ने अपने पाठ्यक्रम में वर्ग 7 तथा वर्ग 8 के लिए जो विषय-वस्तु सम्मिलित किया हैं उनकी ही वर्ग 9 एवं वर्ग 10 में थोड़ा-सा विस्तारित कर पुनरावृति कर दी गयी हैं।

अत: वर्ग 8 तक गणित एवं विज्ञान को अनिवार्य विषय के रूप में रखा गया हैं। मध्यमा प्रथम एवं द्वितोय वर्ष में उक्त विषयो को वैकल्पिक विषयों की श्रेणी में रखा गया हैं ताकि भविष्य में प्राच्य विद्या का गम्भीर विद्वान बनने के इच्छुक छात्र अपना-अपना सही विकल्प चुन सके।

मध्यमा में 8 पत्र रखे गये हैं जिसमें सप्तम एवं अष्टम पत्र वैकल्पिक हैं। सामान्य विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, गृह विज्ञान, पौरोहित्य संगीत, मैथिली, हिन्दी; भोजपुरी, नेपाली इन ग्यारह विषयों को वकल्पिक विषयों के रूप में रखा गया हैं जिनमें से किन्हीं दो को सप्तम एवं अष्टम पत्र के रूप में चयन करना अनिवार्य हैं।

संस्कृत के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पत्रों के कुल पूर्णांक 300 का 30 प्रतिशत लाना संस्कृत पत्रों में उत्तीर्णता के लिए अनिवार्य हैं।

चतुर्थ पत्र (राष्ट्रभाषा हिन्दी) तथा पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा) में भी उत्तीर्णता के लिए 30 प्रतिशत अंक अलग-अलग लाना अनिवार्य है। षष्ठ पत्र (अंग्रेजी) सप्तम पत्र (ऐच्छिक) तथा अष्टम पर (ऐच्छिक एवं अतिरिक्त तीनों पत्रों में से जिसमें सबसे कम अंक प्राप्त होगा, उसे अतिरिक्त पत्र के रूप में स्वीकार किया जायेगा तथा उस पत्र का 30 से अतिरिक्त अंक ही श्रेणी के लिए कुल प्राप्तांक में योजनीय होगा।

मध्यमा परीक्षा में श्रेणी का निर्धारण 7 पत्रों अर्थात् 700 अंकों पर ही होगा।

प्रथम श्रेणी — 700 का 60 प्रतिशत=420
द्वितीय श्रेणी — 700 का 45 प्रतिशत=315
तृतीय श्रेणी — 700 का 30 प्रतिशस=210+5=215

—वर्ग प्रथम से लेकर प्रथमा प्रथम वर्ष तक की परीक्षाएं विद्यालय द्वारा ही आयोजित की जायेगी। वर्ग प्रथमा द्वितीय वर्ष की परीक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित होगी। जिसमें मात्र प्रथमा द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में निहित विषय-वस्तुओं से ही प्रश्न पूछे जायेंगे।

—वर्ग मध्यमा प्रथम वर्ष की परीक्षा विद्यालय द्वारा ही आयोजित होगी। मध्यमा द्वितीय वर्ष की परीक्षा बि. म. शि. बो., पटना द्वारा आयोजित होगी। मध्यमा द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में निहित विषय-वस्तुओं से ही प्रश्न पूछे जायेंगे।

वैकल्पिक विषयों मे से किसी एक भाषा को ऐच्छिक पत्र के रूप में लिया जा सकता हैं।

वर्ग—प्रथम

प्रथम वर्ग में 200 अंक के दो विषय होंगे ;—

1. भाषा 100

   (क) प्रथम खण्ड (संस्कृत) 50 अंक

   (ख) द्वितीय खण्ड (हिन्दी) 50 अंक

2. गणित 100

विवरण : (1) भाषा :—

(अ) संस्कृत 50 अंक

(क) संस्कृत एवं हिन्दी शब्दों द्वारा निर्दिष्ट चित्रों के माध्यम से वर्णमाला का ज्ञान 50 अंक

पाठ्यपुस्तक—कोई उपयोगी पुस्तक।

(ख) संस्कृत पद्याभ्यास

बालोपयोगी नीति के 10 श्लोकों का अभ्यास कराया जाय इसकी परीक्षा मौखिक ली जावेगी।

(3) हिन्दी

(क) चित्रों के माध्यम से वर्णमाला का ज्ञान

(ख) मात्रायुक्त सरल शब्दों की रचना।

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में प्रथम वर्ग के लिए बी० टी० बी० सी० द्वारा निर्धारित पुस्तक।

2. गणित 100 अंक

(क) 1 से 100 तक की गिनती (हिन्दी एवं संस्कृत मे)

(ख) 2 से 20 तक का पहाड़ा

(ग) बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित गणित के माध्यम से साधारण जोड़ तथा घटाव।

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

वर्ग—द्वितीय

1. प्रथम पत्र (भाषा) 100 अंक

खण्ड "क" (संस्कृत)

1. पाठ्यपुस्तक—संस्कृत सोपानम् भाग—2 50 अंक

अथवा इस वर्ग के लिए उपलब्ध कोई उपयोगी पुस्तक 20

2. बालक शब्दों के कारक रूपों का अभ्यास 10

धातु रूप :

"भू" धातु का लट् लकार तीनों वचनो में रूप। 10

3. अमरकोष—1 से 9 श्लोकों का अभ्यास (स्वर्ग वर्ग) 10

खण्ड "ख" (हिन्दी) 50 अंक

पाठ्य पुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पुस्तक

3. गणित 100 अंक

पाठ्य पुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पुस्तक।

वर्ग—तृतीय

1. प्रथम पत्र (संस्कृत भाषा) 100

(क) पाठ्य पुस्तक 50 अंक

संस्कृत सोपानम् भाग—3 अथवा बी०टी०बी०सी० या इस

वर्गार्थ उपलब्ध पुस्तक।

(ख) शब्द रूप 20

मुनि, फल

(ग) धातु रूप 20

पठ् गम (लट्, लोट्)

(घ) अमरकोष 10

स्वर्ग वर्ग के 10 से 20 श्लोक संख्या पर्यन्त।

2. द्वितीय पत्र (हिन्दी) 100 अंक

पाठ्य पुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

3. तृतीय पत्र (गणित) 100 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित।

4. चतुर्थ पत्र (विज्ञान) 100 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित।

5. सामाजिक शिक्षा 100 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम।

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित।

वर्ग चतुर्थ

1. प्रथम पत्र (संस्कृत भाषा) 100 अक

(क) पाठ्यपुस्तक 50 अंक

बी०टी०बी०सो० द्वारा प्रकाशित पुस्तक

(ख) शब्दरूप — 20 अंक

साधु, लता

(ग) धातु रूप — 20 अंक

पा, दा, (लट्, लोट्)

(घ) अमरकोष — 10 अंक

स्वर्ग वर्ग 21 से 40 श्लोक

2. द्वितीय पत्र (हिन्दी) — 100 अंक

(क) पाठ्यपुस्तक — 70 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

(ख) व्याकरण एवं रचना — 30 अंक

3. तृतीय पत्र (गणित) — 100 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम

पाठ्यपुस्तक--बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

4. चतुर्थ पत्र (विज्ञान) — 100 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक

5. पंचम् पत्र (सामाजिक शिक्षा) — 100 अंक

सामान्य विद्यालयों के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम।

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

वर्ग—पंचम

1. प्रथम पत्र (संस्कृत भाषा) — 100 अंक

(क) पाठ्यपुस्तक — 60 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक

(ख) व्याकरण 40 अंक

शब्दरूप -- पति, सखि 15

धातु रूप - दृश, अस् (लृट्, लोट्) 15

अमरकोष 10

स्वर वर्ग—41 से 50

2. द्वितीय पत्र (हिन्दी) 100 अंक

(क) पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक 70

(ख) व्याकरण एवं रचना 30

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम।

3. तृतीय पत्र (गणित) 100 अंक

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

4. चतुर्थ पत्र (विज्ञान) 100 अंक

पाठ्यक्रम—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

5. पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा) 100 अंक

पाठ्यग्रन्थ—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

वर्ग—षष्ठ

1. प्रथम पत्र (संस्कृत) 100 अंक

(क) पाठ्यपुस्तक 40 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा षष्ठ वर्ग के लिए प्रकाशित पुस्तक।

(ख) शब्द रूप—स्त्री, पथिन, विद्वान, गो, राजन 15

	(ग) धातु रूप—हन्, श्रु, कृ, कथ (लट्, लोट, लृट, लङ)	15
	(घ) अमरकोष स्वरवर्ग 51 से 71	15
	(च) अनुवाद	15
2.	द्वितीय पत्र (हिन्दी)	100
	(क) पाठ्यपुस्तक बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित	60
	(ख) व्याकरण एवं रचना बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम	40
3	तृतीय पत्र (अंग्रेजी)	100
	(क) पाठ्यपुस्तक बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	40
	(ख) व्याकरण एवं रचना कम्प्रहेनसन, अनुवाद बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम	60
4.	चतुर्थ पत्र (गणित) बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	100
5.	पंचम पत्र (विज्ञान)	100
	भौतिक—	35
	रसायन विज्ञान	30
	जीव विज्ञान	35
	पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में षष्ठ वर्ग के लिए स्वीकृत पाठ्यक्रम	
6.	षष्ठ पत्र (सामाजिक शिक्षा	100
	(क) भूगोल	40
	(ख) नागरिक शास्त्र	20

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०वी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम।

प्रथमा प्रथम वर्ष (सप्तम् वर्ग)

इस वर्ग में 7 पत्र होंगे। प्रत्येक का पूर्णांक 100 होगा।

1. प्रथम पत्र (संस्कृत व्याकरण) 100

(क) लघु सिद्धान्त कौमुदी 60

(क) माहेश्वर सूत्र एवं प्रत्याहार निर्माण

—स्वरभेद (हृस्व, दीर्घ, प्लुत)

—व्यंजन—भेद (स्पर्श, अन्तः स्थ, उष्म)

—स्वर्ण, संहिता, संयोग, पद-संज्ञा एवं वर्णों के उच्चारण स्थान (विधायक सूत्र एवं उदाहरण)

(ख) यण्, अयादि, गुण, वृद्धि, अच्सन्धि, - पररूप, पूर्वरूप एवं दीर्घसन्धि (विधायक सूत्र एवं उदाहरण)

(ग) शब्द रूप :—

(1) संज्ञाशब्द—देव, मुनि, साधु, पति, सखि, नदी, पितृ, दातृ

(2) सर्वनाम शब्द—युष्मद्, अस्मद्, तत्, (तीनों लिंगों में) इदम् (तीनों लिंगों में)

(घ) धातु रूप—भू, पा, घ्रा, स्था, दृश, गम, श्रु अस् (लट्, लोट, लृट, लङ् एवं विधिलिंग में)

2. अशुद्धि संशोधन 10

3. हिन्दी से संस्कृत अनुवाद 15

4. संस्कृत से हिन्दी अनुवाद 15

2. द्वितीय पत्र (संस्कृत साहित्य) 100 अंक

(क) पद्य ; रघुवंश प्रथम सर्ग 40

(प्रथम सर्ग के पूर्वार्द्ध का श्लोकाभ्यास एवं अर्थ)

(ख) गद्य : हितोपदेश 40

(मित्र लाभ) जरद्गव-गृध कथा पर्यन्त

(ग) अमर कोष 20

स्वर्ग वर्ग

तृतीय पत्र (हिन्दी) 100 अंक

पाठ्य पुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक 75 अंक

(ख) व्याकरण एवं रचना 25 अंक

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम

चतुर्थ पत्र (गणित) 100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सप्तम वर्ग के लिए सामान्य विद्यालयों में स्वीकृत पुस्तक।

पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा) 100 अंक

(क) भूगोल 35

(ख) इतिहास 35

(ग) नागरिक शास्त्र 30

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में सप्तम् वर्ग के लिए स्वीकृत पुस्तक ।

षष्ठ पत्र (अंग्रेजी) 100 अंक

(क) पाठ्य पुस्तक 50

सामान्य विद्यालयों में सप्तम वर्ग के लिए स्वीकृत पुस्तकें ।

(ख) ग्रामर, ट्रान्सलेशन, कम्पोजीशन 50

सामान्य विद्यालयों में सप्तम वर्ग के लिए स्वीकृत पुस्तकें ।

सप्तम पत्र (विज्ञान) 100 अंक

इस पत्र में तीन विषय अन्तर्निहित होंगे :—

(क) भौतिकी 30

(ख) रसायनशास्त्र 30

(ग) जीव विज्ञान 40

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में सप्तम वर्ग के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में सप्तम वर्ग के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम ।

प्रथमा द्वितीय वर्ष (अष्टम वर्ग)

इस वर्ग में 7 (सात) पत्र होंगे । प्रत्येक का पूर्णांक 100 होगा ।

1. प्रथम पत्र (संस्कृत व्याकरण) 100 अंक

(क) लघु सिद्धान्त कौमुदी 60

सन्धि—स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग सन्धि

शब्द रूप

संज्ञा शब्द—रमा, मति, स्त्री, वारि, मधु, फल, पथिन्, राजन्, विद्वस्

सर्वनाम शब्द—किम् अदस्, द्वि. त्रि, चतुर, पंचन्, अष्टम

धातु रूप—हन्, ब्रज, शी, दा, घ्रा, चित्र, प्रच्छ्, कृ, क्री, ग्रह्, चुर, (लट्, लोट, लृट, लङ, विधिलिंग)

(ख) अशुद्धि संशोधन 10

(ग) हिन्दी से संस्कृत अनुवाद 15

(घ) संस्कृत से हिन्दी अनुवाद 15

2. द्वितीय पत्र (संस्कृत साहित्य) 100 अंक

पद्य :-

(क) रघुवंश (प्रथम सर्ग) 40

प्रथम सर्ग के उतरार्द्ध का श्लोकाभ्यास एवं अर्थ।
सम्पूर्ण कथा ज्ञान।

(ख) हितोपदेश (गद्य) 40

(मित्र लाभ) इत्याकार्णजम्बुकः सिंहम्ः सभी हितम्।

(ग) अमरकोष 20

व्योम वर्ग, दिक् वर्ग, कालवर्ग

3. तृतीय पत्र (हिन्दी) 100 अंक

(क) पाठ्य पुस्तक 75

बी०टी०बी०सी० द्वारा स्वीकृत पुस्तक

(ख) व्याकरण एवं रचना 25

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम एवं पुस्तक।

4. चतुर्थ पत्र (गणित) 100 अंक

अष्टम् वर्ग के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित

पुस्तक एवं पाठ्यक्रम।

5. पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा) 100 अंक

इस पत्र में तीन विषय अन्तर्निहित होंगे।

(क) भूगोल 35

(ख) इतिहास 35

(द) नागरिक शास्त्र 30

सामान्य विद्यालयों में अष्टम् वर्ग के लिए बी०टी०बी०सी०
द्वारा निर्धारित पुस्तक एवं पाठ्यक्रम।

6. षष्ठ पत्र (अंग्रेजी) 100 अंक

(क) पाठ्यपुस्तक 50

सामान्य विद्यालयों में अष्टम वर्ग के लिए निर्धारित
पुस्तक।

(क) व्याकरण, ट्रान्सलेशन, कम्पोजीशन 50

सामान्य विद्यालयों में अष्टम् वर्ग के लिए निर्धारित
पाठ्यक्रम।

7. सप्तम् पत्र (विज्ञान) 100 अंक

इस पत्र में तीन विषय अन्तर्निहित होंगे।

(क) भौतिकी 30

(ख) रसायनशास्त्र 30

(ग) जीव विज्ञान 40

पाठ्यपुस्तक--सामान्य विद्यालयों में अष्टम वर्ग के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम--सामान्य विद्यालयों में अष्टम् वर्ग के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम।

वर्ग--मध्यमा प्रथम वर्ष (नवम वर्ग)

		पूर्णांक
1.	संस्कृत प्रथम पत्र (व्याकरण)	100 अंक
2.	संस्कृत द्वितीय पत्र (साहित्य)	100 अंक
3.	संस्कृत तृतीय पत्र (वेद, ज्योतिष, दर्शन आदि)	100 अंक
4.	चतुर्थ पत्र (राष्ट्रभाषा हिन्दी)	100 अंक
5.	पंचम् पत्र (सामाजिक शिक्षा) (इतिहास, सिविक्स, भूगोल)	100 अंक
6.	षष्ठ पत्र (अंग्रेजी)	100 अन्क
7.	सप्तम् पत्र (ऐच्छिक)	100 अंक
8.	अष्टम् पत्र (ऐच्छिक) (अतिरिक्त)	100 अंक
	कुल पूर्णांक :	800 अंक

ऐच्छिक विषयों की तालिका

(क) विज्ञान (भौतिकी, रसायनशास्त्र, जीव विज्ञान) (ख) गणित (ग) अर्थशास्त्र (घ) वाणिज्य (च) गृह विज्ञान (छ) पौरोहित्य (ज) संगीत (झ) मैथिली (ट) भोजपुरी (ठ) नेपाली

1. प्रथम पत्र (संस्कृत व्याकरण) 100 अंक

(क) पाठ्य ग्रन्थ — लघु सिद्धान्त कौमुदी 60 अंक

विवरण :—

सन्धि--अच् सन्धि, विधायक सूत्रों की व्याख्या एवं सन्धि विच्छेद ।

(ख) षड्लिंग (शब्दरूप) सर्वनाम के अतिरिक्त अजन्त एवं हलन्त शब्दों के रूप ।

(ग) अव्यय—अव्यय शब्द एवं उनके अर्थ

(घ) तिङन्त (धातुरूप) भू, पा, घ्रा, स्था, दृश्, श्रु, गम्, हन्, अस्, ब्रू, कृ, धातुओं के रूप ।
[लट्, लृट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ्]

(ङ) वाच्यान्तर—कर्तृ वाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन ।

(च) कृदन्त—क्त्वा, तुमुन्, क्तवतु, ल्यप्, शतृ, शानच्, प्रत्ययों का प्रकृति-प्रत्यय विभाग ।

(छ) विभक्ति निर्णय—सूत्र निर्देश पूर्वक कारक के सभी विभक्तियों का निर्णय ।

(ज) समास—समास-भेद, सविग्रह उदाहरण ।

(झ) तद्धित—अपत्यवाचक, भावार्थक एवं तुलनात्मक प्रत्यय ।

(ट) स्त्री प्रत्यय—टाप् और डाप् प्रत्ययों के प्रयोग ।

2. हिन्दी से संस्कृत अनुवाद 15 अंक

3. संस्कृत से हिन्दी अनुवाद 13 अंक

4 अशुद्धि संशोधन 10 अंक

2. द्वितीय पत्र [संस्कृत साहित्य] 100 अंक

पद्य :

[क] मूल रामायण [वाल्मीकि 30 अंक

वालकाण्ड 1 से 50 श्लोक

[श्लोकाभ्यास एवं हिन्दी अनुवाद] अथवा

सीता हनुमत्सवांद : [वाल्मीकि] [सकलयिता-डा० यदुवंश मिश्र

वा०रा० सुन्दरकाण्ड, सर्ग—31 तथा 32 [श्लोकाभ्यास एवं

हिन्दी अनुवाद]

[ख] रघुवंशम् [कालिदास] 30 अंक

द्वितीय सर्ग का पूर्वार्द्ध [सप्रसंग व्याख्या]

श्लोक-1-35

गद्य : 25 अंक

—पिङगलक-संजीवक-दमनक कथा

—रावण बिभीषणयो: : संवाद

रचना :

संस्कृत निबन्ध अथवा पत्र लेखन 15 अंक

सहायक पाठ्यपुस्तक :

[क] मूल रामायण—डॉ० चन्द्रकिशोर झा

[ख] सीता-हनुमत्संवाद : डॉ० यदुवंश मिश्र

[वाल्मीकीय] ज्योति कुटीर, गजहरा, मधुवनी।

3. तृतीय पत्र [वेद, ज्योतिष, दर्शन, संध्योपासना विधि : 100 अंक

[क] वेद 25 अंक

स्वस्तिवाचन एवं शान्तिवाचन मंत्र

["गणानांत्वा" से सहनाववतु" पर्यन्त कुल 11 मंत्र]
मन्त्राभ्यास मात्र

सहायक ग्रन्थ "वेदामृतम्"

सहायक ग्रन्थ—वेदामृतम्—संकलनकर्त्ता एवं अनुवाद कर्त्ता—

(क) डॉ० यदुवंश मिश्र

अनुवादक (ख) श्री रामविलास मेहता

(ग) श्री गोपाल जी त्रिपाठी

[ख] ज्योतिष 25 अंक

तिथि, नक्षत्र, राशि, चन्द्रविचार, अर्द्ध प्रहरा पञ्चक
(श्लोकाभ्यास एवं अर्थज्ञान) (सहायक ग्रन्थ—मुहूर्तज्ञानम्)
—लेखक डॉ० चन्द्रकिशोर झा

[ग] दर्शन 25 अंक

श्रीमद्भगवद्गीता का अध्याय—6 (श्लोकार्थ मात्र)

[घ] संध्योपासना विधि— 25 अंक

स.—डॉ० जय नारायण यादव
प्रातः स्मरण मन्त्र से अधमर्षणमन्त्र पर्यन्त (अभ्यास)

4. चतुर्थ पत्र (हिन्दी राष्ट्रभाषा) 100 अंक

[क] पाठ्यपुस्तक 60 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम ।

[ख] संक्षेपण, व्याकरण, रचना एवं निबंध 40 अंक

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।

5. पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा) 100 अंक

[क] इतिहास 35 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा सामान्य विद्यालयों में नवम् वर्ग के लिए प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

[ख] भूगोल 35 अंक

बी०टी०बी०सी द्वारा सामान्य विद्यालयों के लिए प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

[ग] नागरिक शास्त्र 30 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा सामान्य विद्यालयों के लिए प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

6. षष्ठ पत्र [अंग्रेजी] 100 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा सामान्य विद्यालयों के लिए प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

7. सप्तम् पत्र (ऐच्छिक) 100 अंक

ऐच्छिक बिषयों की दी गयी तालिका में से किसी एक विषय को ऐच्छिक सप्तम् पत्र के रूप में लिया जा सकता है जिसका पाठ्यक्रम ऐच्छिक विषयों की तालिका में वर्णित है।

8. अष्टम् पत्र (ऐच्छिक) 100 अंक

ऐच्छिक विषयों की दी गयी तालिका में से किसी भी एक विषय को ऐच्छिक अष्टम् पत्र के रूप में लिया जा सकता है जिसका पाठ्यक्रम ऐच्छिक विषयों की तालिका में वर्णित है।

ऐच्छिक विषयों की तालिका

वर्ग—मध्यमा प्रथम वर्ष (नवम वर्ग)

1. विषय—विज्ञान 100 अंक

[क] भौतिकी 35

[ख] रसायनशास्त्र 35

[ग] जीव विज्ञान 30

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा स्वीकृत पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

2. विषय—गणित 100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

3. अर्थशास्त्र : 100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में नवम् वर्ग के लिए बी०टी० बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

4. वाणिज्य : 100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए बी०टी०

बी०सी० द्वारा प्रकाशित तुस्तक ।

पाठ्क्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए निर्धारित विषय वस्तु ।

5. गृह विज्ञान (बालिकाओं के लिए) 100 अंक

सैद्धान्तिक 70

व्यावहारिक 30

पाठ्यपुस्तक--सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए बी०टी बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए निर्धारित विषय-वस्तु ।

6. पौरोहित्य 100 अंक

[क] दशकर्म पौरोहित्य ज्ञान 40 अंक

सहायक ग्रन्थ—वर्षकृत्य भाग-1

[पं० रामचन्द्र झा[

[ख] पितृकर्म [एकोदिष्ट] पार्वण ज्ञान 40 अंक

सहायक ग्रन्थ—पितृकर्म पद्धति

[ग] कुश, [तेकुशा, मोडा, बिरनी, अंगूठी आदि[निर्माण विधि 20 अंक

7. संगीत 100 अंक

सैद्धान्तिक 70

व्यवहारिक 30

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम।

मैथिली 100 अंक

पद्य 40 अंक

(क) उगना (खण्ड काव्य) 25 अंक
(लेखक—डॉ० जयनारायण यादव)

पाठ्यक्रम "उगना" का पूर्वार्द्ध ही इस वर्ग में पाठ्य होगा।

(ख) विद्यापति पदावली—सं० रामबृक्ष वेनीपुरी 15 अंक
(गोसाउनिक गीत एवं नाचारी मात्र)

अथवा

मैथिली रामायण (सुन्दरकाण्ड, अध्याय-3) लेखक—चन्द्रा झा

गद्य 20 अंक

गल्प गुच्छ—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित

पाठ्यक्रम—इस वर्ग में दोनों ग्रन्थों का पूर्वार्द्ध ही पाठ्य होगा।

निबंध 10 अंक

अनुवाद 10 अंक

व्याकरण, रचना, तिरहुताक्षर वर्णमाला एवं तिरहुतांक
मिथिला लोकोक्ति 20 अंक

व्याकरण—पाठ्यक्रम—(क) तिरहुताक्षर एवं तिरहुतांक ज्ञान
(ख) संज्ञा (मैथिली ठेठ शब्द एवं प्रयोग)
(ग) सर्वनाम (पुरुष वाचक, प्रश्नवाचक)

(घ) विशेषण (गुणवाचक, संख्यावाचक समूहवाचक)

(च) लिंग (लिंगभेद एवं प्रयोग)

(छ) वचन

(ज) कारक (शब्दों का विभिन्न कारकों में रूपावली)

(झ) क्रिया

(ट) काल

सहायक ग्रन्थ—मैथिली बाल पोथी

(तिरहुताक्षर)

लेखक—डॉ० यदुवंश मिश्र

प्रकाशक—बटुक कार्यालय, इलाहाबाद

अथवा

सुबोध व्याकरण

[लेखक—डॉ० आनन्द मिश्र, भवानी प्रकाशन, पटना]

मिथिला लोकोक्ति—[सूक्ति शतक पचीसी] का पूर्वाद्ध

लेखक—डॉ० जयनारायण यादव ।

9. भोजपुरी 100 अंक

[क] गद्य 15 अंक

भोजपुरी गद्य संग्रह

[लेखक—भवानीदत्त शर्मा]

पाठ्यक्रम—पूर्वाद्ध

[ख] पद्य : 15 अंक

कविता संग्रह

पाठ्यक्रम—पूर्वार्द्ध

[ग] बाबू कुँवर सिंह 15 अंक

[लेखक—उदयकरण शर्मा]

पाठ्यक्रम—पूर्वार्द्ध

[घ] भोजपुरी में निबंध 20 अंक

[च] भोजपुरी व्याकरण और रचना 20 अंक

[छ] संस्कृत से भोजपुरी में अनुवाद 15 अंक

0. ऐच्छिक विषय 11. नेपाली

[क] नेपाली-गद्य [ख] नेपाली-पद्य	40 अंक
[ग] नेपाली भाषा में निबन्ध	25 अंक
[घ] व्याकरण और रचना	25 अंक
[च] संस्कृत से नेपाली में अनुवाद	10 अंक
	100 अंक कुल पूर्णांक

सहायक पुस्तकें :—

[क] नेपाली गद्य-पद्य संग्रह (एस०एल०सी० कोर्स)

[ख] मुना-मदन महाकाव्य

(लेखक—श्री लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा)

[ग] हाम्रो नेपाली व्याकरण तथा रचना

(लेखक—आर० के० पी०)

विवेक प्रकाशन राजविराज नेपाल)

नोट : उपर्युक्त सभी पुस्तकों का आधा-आधा भाग क्रम मध्यमा प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के लिए पाठ्य होग

वर्ष—मध्यमा द्वितीय वर्ष (दशम वर्ग)

		पूर्णांक
1.	संस्कृत प्रथम पत्र (व्याकरण)	100 अंक
2.	संस्कृत द्वितीय पत्र (साहित्य)	100 अंक
3.	संस्कृत तृतीय पत्र (वेद, ज्योतिष दर्शन आदि)	100 अंक
4.	चतुर्थ पत्र (राष्ट्रभाषा हिन्दी)	100 अंक
5.	पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा) (इतिहास, सिविक्स, भूगोल)	100 अंक
6.	षष्ठ पत्र (अंग्रेजी)	100 अंक
7.	सप्तम पत्र (ऐच्छिक)	100 अंक
8.	अष्टम पत्र (ऐच्छिक)	100 अंक
	कुल पूर्णांक :	800 अंक

ऐच्छिक विषयों की तालिका :

(क) विज्ञान (भौतिकी, रसायनशास्त्र, जीवविज्ञान)

(ख) गणित (ग) अर्थशास्त्र (घ) वाणिज्य (च) गृह विज्ञान

(छ) पौरोहित्य (ज) संगीत (झ) मैथिली (ट) भोजपुरी
(ठ) नेपाली

1. प्रथम पत्र (संस्कृत व्याकरण) 100 अंक

(क) पाठ्य ग्रन्थ—लघु सिद्धान्त कौमुदी 60 अंक

विवरण :

(क) सन्धि—सूत्र निर्देश पूर्वक सन्धि-प्रक्रिया का ज्ञान

(ख) षड्लिंग (शब्दरूप)—सर्वनाम शब्दों के रूप

(ग) अव्यय—अव्यय शब्दों के अर्थ एवं वाक्य प्रयोग।

(घ) तिङन्त (धातुरूप)—वृत, विद्, शीङ, दा, घ्रा, दशगण

नीती, चिगप्रच्छ, क्री, चुर, धातुओं के रूप (लट्, लृट, लोट, लङ् और विधि लिङ् लकार में)

ण्यन्त रूप—भू, स्था, पठ्, लिख, गम्, दृश, श्रु, हन्, प्रच्छ, स्ना, कृ, शी, मुज् धातुओं के ण्यन्त रूप एवं प्रयोग।

(ङ) वाच्यान्तर—कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य एवं भाववाच्य।

(च) कृदन्त—अनीयर, ण्यत्, ण्वुल, तृस्व्, शृ, क्तिन्, ल्यप् प्रत्ययों का प्रकृति प्रत्यय विभाग।

(छ) विभक्ति निर्णय—सूत्र निदेश पूर्वक विभक्ति निर्णय।

(ज) समास-भेद, सविग्रह उदाहरण

(झ) तद्धित—भावार्थक, स्वार्थवाचक एवं विभक्त्यर्थक प्रत्यय, बोध (सोदाहरण)

(ट) स्त्री प्रत्यय—आनुक् (ङीप्), ऊङ्, ङीन् एव "ति" प्रत्ययों के उदाहरण ।

2. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद — 15 अंक

3. संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद — 15 अंक

4. अशुद्धि संशोधन — 10 अंक

2. <u>द्वितीय पत्र (संस्कृत साहित्य)</u> — 100 अंक

1. पद्य (वाल्मीकि)

(क(मूल रामायणम् — 30 अंक

बालकाण्ड, श्लोक संख्या 51 से 100 तक
(श्लोकाभ्यास एवं हिन्दी अनुवाद)

अथवा

सीता-हनुमत्संवाद: (बाल्मीकि

—संकलयिता डॉ० यदुवंश मिश्रा

वा० रा० सुन्दर काण्ड, सर्ग-33 एवं 34
(श्लोकाभ्यास एवं हिन्दी अनुवाद)

(च) रघुवंश (कालिदास) — 30 अंक

द्वितीय सर्ग का उत्तरार्द्ध (सप्रसंग व्याख्या)

2. गद्य : — 25 अंक

वीरवरोपाख्यानम् (गद्य)
वासुदेवस्य जन्म—माहात्म्यम् (नाटकम्)
प्रह्लादोपाख्यानम्,

3. रचना ; 15 अंक

(क) संस्कृत निबन्ध अथवा पत्र लेखन :

सहायक पाठ्यपुस्तक :

(क) मूल रामायणम् (बाल्मीकीय)—डॉ० चन्द्रकिशोर झा

(ख) सीता हनुमत्संवाद (बाल्मीकीय—डॉ० यदुवंश मिश्र,

ज्योति कुटीर, गजहरा, मधुबनी।

3. तृतीय पत्र (वेद, ज्योतिष, दर्शन, संध्योपासन विधि) : 100 अंक

(क) वेद 25 अंक

स्वस्ति एवं शान्तिवाचन मन्त्र

(गणानान्त्वा से सहनाववतु··· पर्यन्त) कुल 11 मन्त्र

मन्त्राभ्यास एवं अर्थज्ञान

सहायक ग्रन्थ-वेदामृतम्, संकलन कर्त्ता एवं अनुवाद कर्त्ता

(क) डॉ० यदुवंश मिश्र

अनुवादक (ख) श्री रामविलास मेहता

(ग) श्री गोपालजी त्रिपाठी

(ख) ज्योतिष 25 अंक

यात्रा, संस्कार (नामकरण, विवाह। गृह प्रवेश एवं गृहारम्भ के मुहूर्तों का ज्ञान (श्लोक सहित अर्थ ज्ञान)

सहायक ग्रन्थ—मुहूर्त ज्ञान—डॉ० चन्द्रकिशोर झा

(ग) दर्शन 25 अंक

श्रीमद्भागवद्गीता—अध्याय—10 (अर्थज्ञान मात्र)

(घ) संध्योपासना विधि 25 अंक

सं डॉ० जयनारायण यादव

सूर्यापस्थान से सूर्यार्घ्य पर्यन्त

4. चतुर्थ पत्र (राष्ट्रभाषा हिन्दी) 100 अंक

(क) पाठ्यपुस्तक 60

(ख) संक्षेपण, व्याकरण एवं रचना, निबंध 40

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में वर्ग दशम् के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम।

पाठ्यपुस्तक—सामान्य सिद्यालयों में वर्ग दशम् के लिए निर्धारित पुस्तकें।

5. पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा) 100 अंक

(क) इतिहास 35 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दशम् वर्ग के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में वर्ग दशम् के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम।

(ख) भूगोल 35 अंक

पाठ्यपुस्तक/पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में वर्ग पंचम के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

(ग) नागरिकशास्त्र 30 अंक

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा सामान्य विद्यालयों में

दशम बर्ग के लिए प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में वर्ग दशम के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम।

6 षष्ठ पत्र (अंग्रेजी) 100 अंक

पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में वर्ग दशम के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम एवं बी०टी०वी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

7 सप्तम पत्र (ऐच्छिक) 100 अंक

ऐच्छिक विषयों की दी गयी तालिका में से किसी भी एक विषय को ऐच्छिक सप्तम पत्र के रूप में लिया जा सकता है जिसका पाठ्यक्रम ऐच्छिक विषयो की तालिका में वर्णित है।

8. अष्टम् पत्र (ऐच्छिक) 100 अंक

ऐच्छिक बिषयों की दी गयी तालिका में से किसी भी एक विषय को ऐच्छिक अष्टम पत्र के रूप में लिया जा सकता हे जिसका पाठ्यक्रम ऐच्छिक विषयों की तालिका वर्णित है।

ऐच्छिक बिषय तालिका

वर्ग—मध्यमा द्वितीयवर्ष (दशम वर्ग)

1. विज्ञान ; 100 अंक

(क) भौतिकी 35

(ख) रसायनशास्त्र 35

(ग) जीव विज्ञान 30

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए बी०टी० बी०सी० द्वारा स्वीकृत पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

2. गणित ; 100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों दशम वर्ग के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

3. अर्थशास्त्र 100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यायों में दशम वर्ग के लिए बी०टी०बी०सीग द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

4. वाणिज्य 100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दशम् वर्ग के लिए बी०टीबी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में दशम् वर्ग के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

5. गृह विज्ञान (बालिकाओं के लिए) 100 अंक

सैद्धान्तिक 70

व्यवहारिक 30

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दशम् वर्ग के लिए

बो०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक !

पाठ्यक्रम --सामान्य विद्यालयों में दशम् वर्ग के लिए निर्धारित विषय-वस्तु ।

6. पौरोहित्य 100 अंक

(क) दशकर्म पद्धति ज्ञान 40 अंक

(सहायक पुस्तक—वर्षकृत्य, भाग-1)

(ख) यज्ञ विधि ज्ञान 40 अंक

(एकादशी, तुलसी उद्यापन)

सहायक पुस्तक—वर्षकृत्य भाग-2 पं० रामचन्द्र झा

(ग) सर्वतोभद्र एवं नवग्रह चक्र तथा गायत्री यन्त्र निर्माण 20 अंक

(सहायक ग्रन्थ—शाक्त प्रमोद)

7. संगीत 100 अंक

सैद्धान्तिक 70

व्यवहारिक 30

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम एवं प्रकाशित पुस्तक ।

8. मैथिली 100 अंक

(क) पद्य 40 अंक

उगना (खण्ड काव्य) लेखक— 25 अंक

डॉ० जयनारायण यादव

पाठ्यक्रम---पुस्तक का उत्तरार्द्ध इस वर्ग में पाठ्य होगा ।

विद्यापति पदावली—रामवृक्ष वेनीपुरी 15 अंक

(गोसाउनिक गीत एवं नाचारी) अथवा

मैथिली रामायण (सुन्दरकाण्ड, अध्याय-4) लेखव—चन्द्रा झा

(ख) गद्य 20 अंक

गल्प गुच्छ—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित

पाठ्यक्रम—इस वर्ग में दोनों पुस्तकों का उत्तरार्द्ध पाठ्य होगा।

(ग) निबन्ध 10 अंक

(घ) अनुवाद 10 अंक

(च) व्याकरण, रचना, तिरहुताक्षर वर्णमाला एवं मिथिला लोकाक्ति 20 अंक

व्यकरण का पाठ्यक्रम :-

(क) तिरहुताक्षरों के माध्यम से संयुक्ताक्षर रहित मैथिली वाक्यो की रचना।

(ख) संज्ञा (टेठ मैथिली शब्द एवं प्रयोग)

(ग) लिंग (लिंग भेद एवं प्रयोग)

(घ) वचन

(च) कारक-मैथिली शब्दों का विभिन्न कारकों में रूपावली।

(छ) सर्वनाम-निजवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक

(ज) विशेषण-(भाववाचक, परिमाणवाचक)

(झ) क्रिया-विभिन्न कारकों, पुरुषों एवं वचनों में क्रिया का रूपावली।

मिथिला लोकोक्ति :-"सूक्ति शतक पचीसी" का उत्तरार्द्ध ।

सहायक ग्रन्थ—"सूक्ति शतक पचीसी" लेखक—

डॉ० जयनारायण यादव

सहायक ग्रन्थ—मैथिली बालपोथी—लेखक—

डॉ० यदुवंश मिश्र

(तिरहुताक्षर) प्रकाशक-वटुक कार्यालय, इलाहाबाद

सुबोध व्याकरण-लेखक-डॉ० आनन्द मिश्र

भवानी प्रकाशन, पटना

9. भोजपुरी — 100 अंक

(क) गद्य — 15 अंक

भोजपुरी गद्य संग्रह—लेखक—भवानीदत्त शर्मा

पाठ्यक्रम—उत्तरार्द्ध

(ख) पद्य — 15 अंक

कविता संग्रह, पाठ्यक्रम—उत्तरार्द्ध

(ग) बाबू कुंवर सिंह — 15 अंक

लेखक—उदयकरण शर्मा, पाठ्यक्रम—उत्तरार्द्ध

(घ) भोजपुरी निबंध — 20 अंक

(च) भोजपुरी व्याकरण और रचना — 20 अंक

(छ) संस्कृत से भोजपुरी में अनुवाद — 15 अंक

10. नेपाली — 100 अंक

[क] नेपाली गद्य

[ख] नेपाली पद्य — 40 अंक

[ग] मुन्ना-मदन महाकाव्य

[घ] नेपाली भाषा में निबन्ध — 25 अंक

[च] व्याकरण और रचना 25 अंक

[छ] संस्कृत से नेपाली में अनुवाद 10 अंक

सहायक पुस्तकें ;-

[क] नेपाली गद्य—पद्य संग्रह (एस०एल०सी० कोर्स)

[ख] मुन्ना-मदन महाकाव्य

(लेखक—श्री लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा)

[ग] हाम्रो नेपाली व्याकरण तथा रचना

(लेखक—आर०के०पी० श्रेष्ठ

विवेक प्रकाशक, राज-विराज नेपाल

नोट : उपर्युक्त सभी पुस्तकों का आधा-आधा भाग क्रमशः मध्यमा प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के लिए पाठ्य होगा।